बातें सिनेमा की

अतीत के आइने में -2009

अजय ब्रह्मात्मज

बातें सिनेमा की

अतीत के आईने में- 2009

अजय ब्रह्मात्मज

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: सितंबर, 2023

© अजय ब्रह्मात्मज

अनुक्रम

मेरी बात	5
उम्मीदें कायम हैं...	7
छोटे शहरों के इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल	11
स्लमडॉग मिलियनेयर बना स्लमडॉग करोड़पति	14
जल्दी ही टूटेगा गजनी का रिकार्ड	17
मखौल बन गए हैं अवार्ड समारोह	20
अक्षय, ऐश्वर्या और हेलन की सेवाएं	24
मनोरंजन जगत में कहां है मंदी?	27
अभिनेत्रियों का राजनीति में आना	30
बन रही हैं डरावनी फिल्में	33
ऑस्कर अवार्ड से आगे का जहां...	36
महिलाएं जगह बना रही हैं!	39
हिन्दी फिल्में और उनकी समीक्षा	42
क्या पटकथा साहित्य है?	45
नहीं दिखेंगी नई फिल्में	48

पॉलिटिक्स और पॉपुलर कल्चर का रिश्ता 52

देसी दर्शकों से बेपरवाह फिल्म इंडस्ट्री 55

दक्षिण अफ्रीका और मिस बॉलीवुड 58

डीवीडी का बदलता स्वरूप 61

फिल्म बिरादरी के बोल-वचन 64

कई परतें थीं बाबू मोशाय संबोधन में 67

दुविधा में संजय दत्त की आत्मकथा 70

न्यूयॉर्क की कामयाबी के बावजूद 73

फिसलन भी है कामयाबी 76

सोचें जरा इस संभावना पर 79

नौ साल की बच्ची के ख्वाब 82

ब्लॉग से ट्विटर तक 85

आशुतोष की युक्ति, प्रियंका की चुनौती 88

फिल्में देखने के लिए जरूरत है तैयारी की 91

सच को छूती कहानियां 94

विदेशी लोकेशन का आकर्षण 97

निराश न हों हिंदी फिल्मप्रेमी 100

पॉपुलर नामों के गेम हैं टीवी शो 103

नवोदित नहीं प्रकाश राज 106

ह्वाट्स योर राशि? के बहाने 109

बिग बॉस अमिताभ बच्चन 112

फिल्म की खासियत बने लुक और स्टाइल 115

हरश्चिंद्रांची फैक्ट्री और आस्कर 118

फेस्टिवल सर्किट में नहीं आते हिंदी प्रदेश 122

फिल्म की रिलीज और रोमांस की खबरें 125

महत्वपूर्ण फिल्म है 'रोड टू संगम' 128

हिंदी फिल्मों में आतंकवाद 131

भारतीय बाजार में हॉलीवुड की पैठ 134

फ्रांस की फिल्म इंडस्ट्री 137

म्यूजिकल फिल्म 'पंचम अनमिक्स्ड' 140

अनुराग, इम्तियाज और विशाल 143

मेरी बात

'बातें सिनेमा' की मेरे लोकप्रिय स्तंभ 'दरअसल' की सीरीज है। मेरी कोशिश है कि 2006 से 2022 के बीच प्रकाशित अपने स्तंभ को एक-एक कर आप सभी के लिए प्रस्तुत करूं। यह हिंदी फिल्म इंडस्ट्री का यह साप्ताहिक दस्तावेजीकरण है। मैंने अपनी जानकारी, अनुभव और बुद्धि से तात्कालिक विषयों, घटनाओं और प्रवृत्तियों पर टिप्पणी की है।

सन 2009 की बात करूं तो यह साल 'स्लमडॉग मिलियनेयर' की वजह से काफी चर्चित रहा। हिंदी में इस फिल्म को 'स्लमडॉग करोड़पति' के नाम से रिलीज किया गया था। मुंबई की एक निचली बस्ती की जिंदगी को उसके किरदारों के माध्यम से डैनी बॉयल ने पेश किया था। इस फिल्म को ऑस्कर पुरस्कार भी हासिल हुए। फिल्म से जुड़ी भारतीय प्रतिभाएं भी सम्मानित हुई थीं। उस साल के शोरगुल से ऐसा लगा था कि इस फिल्म की कामयाबी और प्रशंसा के बाद यह एक ट्रेंड बनेगा, लेकिन विदेशी निर्देशकों ने भारतीय कहानियों में अतिरिक्त रूचि नहीं दिखाई।

2009 के अपने इस स्तंभ को पढ़ते हुए मुझे लगा कि मैं जिन संभावनाओं और स्थितियों की बातें करता रहा हूं, वे समय के साथ सच होती गई हैं। मेरे आकलन का

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य होता है। उसी के आधार पर मैं वर्तमान की स्थिति और भविष्य की संभावनाओं की बातें करता हूं। मैं मनोरंजन जगत का कोई ज्योतिषी नहीं हूं।

सन 2009 में मल्टीप्लेक्स मालिकों और फिल्म निर्माताओं के बीच कमाई के लाभांश शेयरिंग को लेकर विवाद हुआ था। निर्माताओं ने दो महीनों तक फिल्में रिलीज नहीं की थीं। बाद में एक समझौते के तहत विवाद खत्म हुआ था। स्थिति सामान्य हुई थी। मल्टीप्लेक्स मालिकों और फिल्म निर्माताओं के बीच खटराग चलता रहता है। दोनों अपने-अपने हितों से निर्देशित होते हैं। मल्टीप्लेक्स मालिकों की मनमानी कई बार निर्माताओं को सांसत में डालती है तो उन्हें अतिवादी स्टैंड और निर्णय लेने पड़ते हैं।

उम्मीद है कि मेरी पिछली पुस्तकों की तरह इसे भी आपका प्यार और समर्थन मिलेगा। नीलाभ और गरिमा श्रीवास्तव की लगन से यह संभव हो पाटा है।

अजय ब्रह्मात्मज

अगस्त 2023